बाबा, स्वामी, सेवा और राजनीति

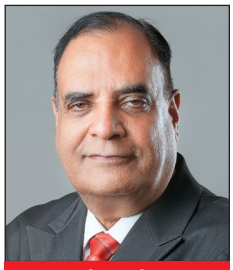

आलोक मेहता

हरिद्वार-ऋषिकेश 1970 में पहली बार जाना हुआ था अवसर था गांधीवादी युवा शिविर। उस समय साधु-महात्माओं के आश्रमों के साथ अंतरराष्ट्रीय आकर्षण का केंद्र बना हुआ महर्षि महेश योगी का आश्रम। आश्रम में भारतीयों के अलावा बड़ी संख्या में विदेशी मिले। आश्रम के सभागृह में ध्यान-योग का शांतिपूर्ण वातावरण मिला। एक दशक बाद जर्मनी और यूरोपीय देशों में महेश योगी के पोस्टर और योग केंद्र देखने को मिले। कुछ वर्ष बाद अमेरिका, यूरोप और अफ्रीका में भी आचार्य रजनीश के ध्यान-अध्यात्म केंद्रों में आकर्षित भारतीयों और विदेशियों की भीड़ दिखाई दी। देर-सबेर आचार्य रजनीश के केंद्र विवादास्पद बने। महेश योगी के अनुयायी कम हुए। महेश योगी और रजनीश ने प्रत्यक्ष रूप से भारतीय राजनीति को प्रभावित नहीं किया लेकिन धीरेंद्र ब्रह्मचारी की योग-शिक्षा सत्तर-अस्सी के दशक में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के साथ पहले आकर्षण और फिर विवादों का कारण बनी। धीरेंद्र ब्रह्मचारी राजनीतिक नेताओं को प्रशासनिक-व्यावसायिक मामलों में सलाह देने लगे। फिर भी राजनीतिक सभाओं या टिकट बंटवारे में कोई भूमिका नहीं निभा सके। इंदिरा गांधी से नरसिंह राव और अटल बिहारी वाजपेयी तक शंकराचार्यों और धर्मगुरुओं का सार्वजनिक रूप से अभिनंदन करते हुए मिले ताकि धर्मप्राण अनुयायी कुछ हद तक राजनीतिक सत्ता के लिए समर्थन दे सकें।

मनमोहन सिंह-नरेंद्र मोदी के सत्ताकाल में स्वामी रामदेव और श्री श्री रविशंकर बहुत तेजी के साथ राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय स्तर पर चर्चा एवं आकर्षण का केंद्र बने। दक्षिण से निकले गुरु रविशंकर समाज के सुविधा संपन्न लोगों के बीच अपने अध्यात्म-ध्यान क्रिया से प्रभावशाली हुए। जबकि स्वामी रामदेव ने योग और आयुर्वेद के जरिये कुछ ही वर्षों में करोड़ों लोगों को जोड़ लिया। इनमें बेहद गरीब से लेकर संपन्न व्यापारी, उद्योगपति, अफसर और राजनेता शामिल थे। हरिद्वार-ऋषिकेश से रांची, पटना, शिमला या दिल्ली में कांग्रेस अथवा गैर-कांग्रेसी नेताओं और सरकारों का समर्थन मिला। विशेष विमानों से नेता स्वामी रामदेव और आचार्य बालकृष्ण के पतंजलि योगपीठ-आश्रम के कार्यक्रमों में जाने लगे।

अन्ना हजारे आंदोलन के दौरान पहले सत्ताधारी कांग्रेसी नेताओं ने ही स्वामी रामदेव की आरती उतारी। वरिष्ठतम कांग्रेसी केंद्रीय मंत्री बाबा की अगवानी करने हवाई अड्डे पर पहुंचे लेकिन कुछ दिनों बाद ही योग-क्रियाओं की तरह आसन एवं सुर बदल गए। इसे पी. चिदंबरम जैसे नेताओं की गलती कहें अथवा संयोग अथवा संघ-भाजपा नेताओं की चतुराई कि स्वामी रामदेव ने कांग्रेस को सत्ता से हटाने के लिए कमर कसी एवं लगभग एक वर्ष देश के हर कोने में योग शिविरों के साथ कांग्रेस को सत्ता से उखाड़ने का अभियान चलाया। इसलिए रामदेव के समर्थकों के इस दावे से कोई इनकार नहीं कर सकता कि भाजपा और नरेंद्र मोदी को सत्ता के शिखर तक पहुंचाने में रामदेव का महत्वपूर्ण योगदान रहा। इसलिए उनका प्रभाव बढ़ना स्वाभाविक है। यह बात अलग है कि अब वह सत्ता की राजनीति में बड़ी भूमिका निभाते नहीं दिखते हैं तथा योग शिविरों एवं आयुर्वेद के प्रचार-प्रसार में व्यस्तता के साथ एक बड़ा साम्राज्य खड़ा करते दिखाई देते हैं।

हरिद्वार प्रेस क्लब में पत्रकारिता की चुनौतियों पर आयोजित एक कार्यक्रम के लिए पिछले दिनों मुझे एक लंबे अर्से के बाद हरिद्वार जाने का अवसर मिला। योग और आयुर्वेद के प्रति पूरी आस्था के बावजूद रामदेव की राजनीतिक सक्रियता पर मेरे जैसे पत्रकारों की कुछ असहमतियां भी रही हैं। इसलिए एक वरिष्ठ पत्रकार मित्र ने मुझसे आग्रह किया कि निष्पक्षता के साथ मुझे पतंजलि योगपीठ और आचार्य बालकृष्ण के असाधारण काम को भी देखना-समझना चाहिए। फिर हरिद्वार के एक पत्रकार ने उत्साह के साथ कहा, 'भाजपा की मोदी सरकार भले ही विदेशों से काला धन लाकर हर हिंदुस्तानी के बैंक खाते में 15 लाख रुपये नहीं दिलवा सकी, स्वामी रामदेव और आचार्य बालकृष्ण अपने योग-आयुर्वेदिक केंद्रों और शैक्षणिक संस्थानों के जरिये देश के लाखों लोगों को लखपति जरूर बनवा देंगे।' बाद में आचार्य बालकृष्ण से भी अनौपचारिक बातचीत का अवसर मिला तो उनके महत्वाकांक्षी इरादों का अंदाज हुआ। बाबा-महात्माओं का एक वर्ग पुरानी परंपराओं और अंधविश्वास को बढ़ावा देने के कारण विवाद और आलोचना झेलते हैं। इसी दृष्टि से मेरे प्रश्न पर आचार्य बालकृष्ण ने स्पष्ट किया- 'पतंजलि के किसी केंद्र में आप कोई मूर्ति दिखा दीजिए। योग के साथ आर्य समाजी परंपरा में वैदिक मंत्रों के साथ यज्ञ-हवन से पर्यावरण की शुद्धता अवश्य होती है। हम तो अंधविश्वास के विरुद्ध ही काम करते हैं। आयुर्वेद की दवाइयां और अच्छे स्वास्थ्य के लिए शुद्ध खाद्य पदार्थों की उपलब्धता कराने का लक्ष्य मुनाफा कमाना कतई नहीं है।'

आचार्य बालकृष्ण ने एक दिलचस्प बात बताई। मोदी सरकार ने दो वर्षों में दस करोड़ से अधिक बैंक खाते खुलवा दिए हैं लेकिन स्वामी रामदेव का कोई बैंक खाता आज तक नहीं है। वह आज भी किसी वातानुकूलित कमरे में नहीं सोते हैं। हां, योग आयुर्वेद और अच्छी भारतीय शिक्षा का राष्ट्रव्यापी विस्तार एकमात्र लक्ष्य है। पतंजलि के विशाल परिसर में भी सादगी और स्वच्छता दिखी। हर वर्ग, जाति, धर्म के लोगों की भीड़ मिली। आश्चर्य इस बात से भी हुआ कि पंजाब के एक अरबपति उद्योगपति डेढ़-दो घंटे तक आचार्य बालकृष्ण से भेंट करने के लिए प्रतीक्षा

छाया: संजय रावत

जोड़ी: स्वामी रामदेव के साथ आचार्य बालकृष्ण

में बैठे रहे। एक पत्रकार ने बताया कि राजनेता, अफसर या व्यापारी उनके केंद्रों में वी.आई.पी. नहीं हो सकते। दूसरी तरफ पिछली सरकार में शुरू हुए कुछ विवादों और मामलों के कारण आचार्य बालकृष्ण और स्वामी रामदेव नियमों-कानूनों को अधिक सावधानी से विस्तार कार्यक्रमों पर अमल कर रहे हैं। अभी देश भर में 1500 से अधिक शैक्षणिक केंद्र बन रहे हैं। देर-सबेर राजधानी दिल्ली क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय स्तर का विश्वविद्यालय भी स्थापित कर सकते हैं। दावा तो यह है कि पतंजलि की योजनाएं भाजपा सरकार पर निर्भर नहीं रहने वाली हैं। वे श्री श्री रविशंकर की तरह संपन्नता और भव्यता के प्रदर्शन और राजनीति से हटकर शिक्षा और स्वास्थ्य के संरक्षण के लिए अभियान जारी रखेंगे।

www.outlookhindi.com